जज़्बा ए इश्क़

[मयंक की १०१ ग़ज़लें]

جذبۂ عشق

आज ग़ुर्बत की तुम बात करना नहीं ।
दिल की मसनद पे तुमको बिठाएँगे हम ।।

के. के. सिंह मयंक "अकबराबादी"

जज़्ब - ए - इश्क़

शायर–के. के. सिंह 'मयंक' अकबराबादी
व. म. वा. अ. प. रे.
र त ला म

जज़्ब–ए– इश्क़ के तुफ़ैल 'मयंक' ।
इश्क़ में नाम तुम भी कर जाओ ॥

प्रकाशक :
कीर्ति साहित्य प्रकाशन
७५, फ्रीगंज, रतलाम

नाम किताब	—	जज़्ब-ए-इश्क़
शायर	—	के.के. सिंह 'मयंक' अकबराबादी
संस्करण	—	प्रथम
प्रथम आवृति	—	२६ जनवरी १९८३
मुख पृष्ठ	—	डॉ. दुर्गा शर्मा
सर्वाधिकार	—	लेखक के सुरक्षित
प्रकाशक	—	कीर्ति साहित्य प्रकाशन
प्रथम संस्करण	—	१००० प्रतियां
मूल्य	—	५ रुपये
सम्पर्क एवं पत्राचार	—	कीर्ति साहित्य प्रकाशन फ्रीगंज, रतलाम फ़ोन : ३७
मुद्रक :		कीर्ति प्रिन्टिंग प्रेस, फ्रीगंज रतलाम
ब्लाक :		सेठिया ब्लाक मेकर

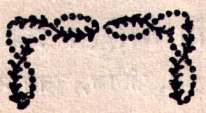

परिचय

अपने बारे में कुछ भी लिखना बड़ा मुश्किल काम है। बचपन से गीत,लोक गीत,वग़ैरा वग़ैरा लिखने का शौक़ रहा है,और पिछले कुछ सालों से ग़ज़लें, और नज्में भी कह रहा हूँ। ये मेरा पेशा नहीं, सिर्फ़ शौक़ है। मेरी पैदाइश ग्राम पडरारी पोस्ट : राया ज़िला मथुरा (उ.प्र. में हुई। एक अरसा-ए-दराज़ से आगरा (अकबराबाद) में मुक़ीम हूँ। मेरे पिताजी स्वर्गीय इश्वरीप्रसादजी एक अज़ीम शख़-सियत और सूफ़ी ख़यालों के थे इसलिये अपने इरादों के पक्के थे। बजाते, खुद कम पढ़े लिखे होने पर भी इसीलिये अपनी (शाख़ाओं) पांचों बच्चों को आलातालीम दिलाने में कामयाब साबित हुए। सर्विस के इस दौरान बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा, महसाना में भी रहा और फ़िलहाल रतलाम में मैं सीनियर डी. सी. एस. के ओहदे पर फ़ाईज़ हूं। अपनी इस रेल सेवा के दौरान हिन्दुस्तान के माया-ए-नाज़ शौरा और शायरात से मुलाकात का शर्फ़ हासिल हुआ जिन में मखसूस नाम ये हैं. आली जनाब इफ़्ते.ख़ार इमाम सिद्दीक़ी एडीटर "शायर" बम्बई, निदाफ़ाजली (फ़िल्मी गीतकार), होश नौमानी (रामपुर), मोहतरिमा साधना खोटे (फ़िल्मी अभिनेत्री व शायरा), श्रीमती माया गोविन्द (फ़िल्मी गीत लेखिका), मुबारक बेगम प्लेबैक सिंगर वग़ैरा-वग़ैरा। इस दौरान हिन्दुस्तान के मशहूर क़व्वाल और बड़े भाई शंकर व शम्भूजी से मिला और उनके घर का सदस्य जैसा बन गया। इनके अलावा क़व्वालों में मुझे भाई सईद जयपुरी ने भी बहुत मुतासिर किया। इनके साथ-साथ में उन सभी क़व्वालों और गायकों का मश्कूर हूं जिन्होंने मेरा कलाम अव्वाम तक पहुंचाया।

पिछले दिनों मेरी एक तसनीफ़ "कुछ गीत अनाम के नाम" से प्रकाशित हुई जिसको मेरे हमअसरों दोस्तों और अदीबों ने क़ाफ़ी पसन्द किया।

और अब ये १०१ ग़ज़लों की ताज़ा तसनीफ जज़्ब-ए-इश्क़ आपके हाथों में है। इसमें मैंने दिल के हर जज़्बे को आसान से आसान ज़ुबान में आप तक पहुंचाने की कोशिश की है। मैं आपके ज़र्रीत मशवरों का तालिब रहूँगा। इस किताब के छपने में मेरे दोस्त फ़ैज़ रतलामी, उस्ताद सूफी हज़रत बिस्मिल नक़्शबन्दी और भाई घनश्याम शर्मा प्रकाशक कीर्ति साहित्य प्रकाशन का भरपूर तआव्वुन रहा, जिनकी कोशिश ओर जद्दोजहद से ये किताब मंज़र-ए-आम तक पहुंच सकी। में इनका तहे दिल से मश्कूर हूं। में आदरणीय श्री दीनबन्धु चौधरी प्रबन्ध सम्पादक दैनिक नवज्योती (कोटा) (जयपुर) (अजमेर) को भी धन्यवाद देता हूं कि इन्होंने अपने लोकप्रिय परचे (अखबार) में मेरी ग़ज़लें दर हफ्ता छापीं ओर मेरी हौसला अफ़जाई की इसके लिये ख़ास तौर से में श्री दिनेश दुबे रोजनामा नवज्योती के विशेष प्रभारी अधीकारी का भी मश्कूर हूं। आख़िर में मेरी तहरीर अधूरी ही रहेगी अगर में अपनी शरीक-ए-हयात श्रीमती सरोज का शुक्रिया अदा नहीं करुं जिन्होंने दिन रात मशक़्क़त कर के जज़्ब-ए-इश्क़ को तकमील तक पहुंचाया ओर मेरी भरपूर इमदाद की। आखिर मैं आपके ज़र्रीन मश्वरों (राय) की उम्मीद लेकर तहरीर ख़त्म करता हूं।

के. के. सिंह, 'मयंक" अकबराबादी
मार्फ़त श्री महेशचन्द्र कर्दम
एच. आई. जी. ५, न्यू शाहगंज, आगरा

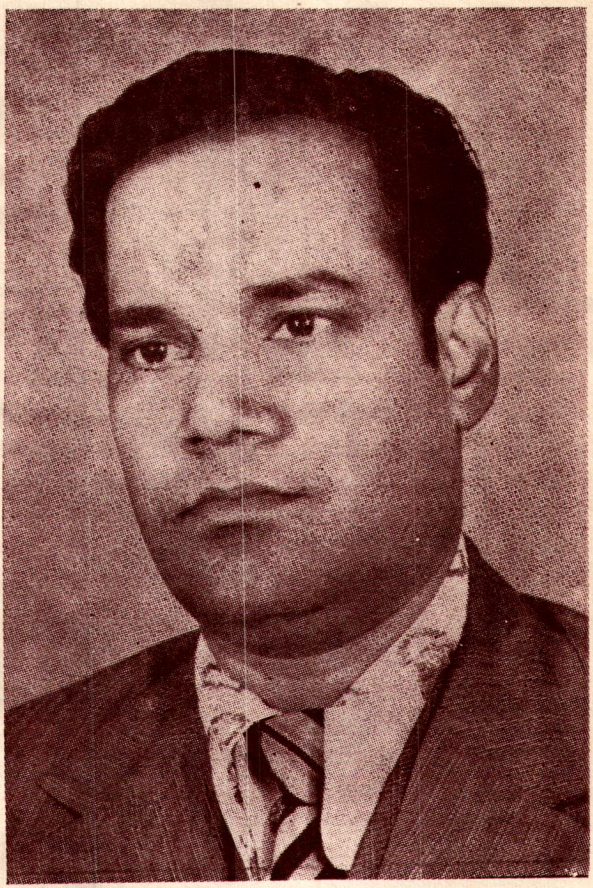

के. के. सिंह "मयंक" अकबराबादी

समर्पित

मेरी परम पूज्यनीया मातुश्री
श्रीमती नारायणी देवी को
सादर समर्पित
जिनकी ममता एवं दुलार
सदैव मेरा पथ प्रदर्शक रहा ।

दो शब्द

भाई किशन [कृष्ण कुमार सिंह] को हम बचपन से जानते हैं। २० साल के बाद जब इनसे मुलाक़ात हुई तो ये रेल्वे के एक आला अफ़सर सीनियर डी० सी० एस० और के० के० सिंह 'मयंक' के एजाज़ो से सजे मिले। जब हम इनके क़रीब आए तो संगीत में भी इनका अपना एक मकाम पाया और इन्हें क़रीब-क़रीब हर साज़ बजाते देखा। शायरी में रदीफ़ क़ फ़िये और ओजान [बहर] में भी मुकम्मिल होने से हम इस नतीजे पर पहुंचे के ये सब मालिक की देन और बुजुर्गो तथा धर्म गुरुओं का दिया हुआ सम्मान और कला है। इतनी कम उम्र में ये सब हासिल कर लेना मालिक की देन और इनकी मेहनत का फल ही है।

हमें के०के० सिंह मयंक के घर में रहने का भी इत्तेफ़ाक़ हुआ और पाया कि इन सब में इनकी धर्म पत्नी हमारी बेटी जैसी श्रीमती सरोज का भरपूर सहयोग है। जिसकी प्रेरणा से ही ये अच्छे शायर बन पाए। एक नेक और समझदार पत्नी मिलने की उन्हें बधाई। बेटी सरोज को आशीर्वाद देते हुए हम "मयंक जी" के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं और भविष्य में अपनी कला के साथ इन्हें और इनके कलाम को साथ रखने की ख्वाहिश का इज़हार करते हैं। साथ ही आपकी नई किताब जज़्ब-ए-इश्क़ के प्रकाशन पर बधाई देते हैं।

शंकर शम्भू

संगीत निर्देशक व कव्वाल-बम्बई

दो शब्द

मैंने श्री के० के० सिंह 'मयंक' का नाम ज़रूर सुना था मगर कभी इनसे मुलाक़ात का शरफ हासिल नहीं हुआ था ! मैं मशकूर हूँ जनाबे फ़ौज रतलामी का कि इनके वसीले से मेरी मुलाक़ात मयंक साहब से हुई !

और फिर इनका मजमुआ-ए-कलाम "कुछ गीत अनाम के नाम" जो इन्होंने मुझे नज़्र किया, देखने का मौक़ा मिला, जिसको पढ़ने के बाद मैं मयंक साहब की शायराना सलाहियत से भी मुतारिफ़ [परिचित] हुआ। इस लिये मैं कह सकता हूँ कि एक अच्छा शायर बनने के लिये जो बातें किसीमें होनी चाहिये वह मयंक साहब में सब पाई जाती हैं। हालांकि यह हिन्दी अदब के आदमी हैं मगर इन्हें उर्दू शायरी से बेहद लगाव है। और आजकल यह उर्दू में ग़ज़लें कह रहे हैं और काफी अच्छा कह रहे हैं।

अब इनका यह दूसरा मजमूआ-ए-कलाम "जज़्ब-ए-इश्क़" जो इस वक्त आपके हाथों में है, अपनी पूरी आबोताब के साथ मंजरे आम पर आया है। इनकी ग़ज़लों को पढ़कर आप महसूस करेंगेकि-जामो मीना, शराबो-साक़ी, देरो-हरम, सय्यादो-आशियाँ, हुस्नो-इश्क़, परदा और जलवा, राही और मन्ज़िल, तूफ़ान और साहिल, शमा और परवाना जैसे इशतेआरों और इशारों का सहारा लेकर आपने एक ऐसे आम आदमी की तसवीर इस ख़ूबी से पेश की है, जिसके दिल में हम कायनात के कर्ब और बेचैनी का उमड़ता हुआ तूफ़ान देख सकते हैं।

मुझे यकीन हैं कि जज़्ब-ए-इश्क़ को कलासिकी रिवायतों के साथ ग़ज़ल में दिल की आवाज़ को सुननें वालों में ज़रूर पसंद किया जायगा। मेरी शुभकामनाऐं मयंक साहब के साथ हैं।

बिस्मिल नक्शबन्दी

कस्टम रोड़, बांसवाड़ा [राजस्थान]

आभार

किसी भी कलाकार, स्पोर्ट्स मेन, शायर, कवि को उभारने में किसी न किसी का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। जब हमने भाई फैज रतलामी के काव्य संकलन "परवाज़" को प्रकाशित किया तो उसके विमोचन में आदरणीय श्री के० के० सिंह 'मयंक' से भेंट हुई, उनकी रचनाऐं सुनी और मैंने कीर्ति साहित्य प्रकाशन के माध्यम से उनके काव्य संकलन के प्रकाशन का प्रस्ताव रखा तो वो सहर्ष तैयार हो गये।

लगभग छः महीने के अथक प्रयास से ये पुस्तक प्रकाशित हो सकी इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन जिन महानुभावों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया और हमारे प्रयास को पूर्ण कराया, जो बीच में रुक सा गया था, मैं उन सबका हार्दिक आभार मानता हूं और विश्वास दिलाता हूं कि भविष्य में ऐसे कलाकारों और कविवों के लिये कीर्ति साहित्य प्रकाशन के माध्यम से कुछ न कुछ जरूर करता रहूंगा। इस पुस्तक से जो धन प्राप्त होगा उसे हम दूसरे सांस्कृतिक एवम् साहित्यिक गतिविधियों में लगाऐंगे।

घनश्याम शर्मा
कीर्ति साहित्य प्रकाशन, ७५,
फ्रीगंज, रतलाम [redacted] : ३७

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

सबसे से क्या-ख़ुद से भी दामन को बचाना होगा ।
तेरी उल्फ़त में हज़ारों को भुलाना होगा ॥

क्या ख़बर थी के कभी आएगी ऐसी भी घड़ी ।
नाम लिख लिख के तेरा ख़ुद ही मिटाना होगा ॥

तेरी उल्फ़त को इबादत का मैं दर्जा दूंगा ।
दिल के मंदिर में फ़क़त तुझको बिठाना होगा ॥

याद है उसका यह हंसते हुए कहना अब तक ।
मेरा हर नाज़ तुझे हंस के उठाना होगा ॥

ए-'मयंक' जा नहीं पाएगा निकल कर दिल से ।
दर्द को उनके यहीं लौट के आना होगा ॥

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

ज़िंदगी दौर-ए-ग़म का सफ़र हो गई।
देखते देखते मुख़्तसर हो गई॥

आरज़ू-ए-तलब का ये अंजाम है।
ज़िंदगी एक सूखा शजर हो गई॥

अश्क रातों की तनहाईयों में बहे।
जाने दुनियाँ को कैसे ख़बर हो गई॥

शाम भटका किये ग़म की तारीक में।
नींद आई तो यारो सहर हो गई॥

उनको कैसे बताएँ ये राज़-ए-हयात।
ज़िन्दगी मुख़्तसर मुख़्तसर हो गई॥

कोई अरमां न पूरा हुआ ए 'मयंक'।
आरज़ू दिल की भी दरबदर हो गई॥

++++ग़ज़ल++++

इस दुनियां की रस्म को हमने ख़ूं अंगेज़ यहां देखा।
भाई से भाई में ऐ यारो बस परहेज़ यहां देखा॥

क़ातिल डाकू और लुटेरे नफ़रत अय्याशी के डेरे।
आज के हर इंसा को हमने बस चंगेज़ यहाँ देखा॥

आग उगलता चांद भी देखा बरफ़ीला सूरज भी देखा।
दौर-ए-जदीदी तौबा तौबा ग़म अंगेज़ यहां देखा॥

बदकारों के महल हैं ऊंचे सच्चे फ़ांसी चढ़ते हैं।
ज़ुल्मों की शमशीर को हमने यारो तेज़ यहां देखा॥

दुनियां क्या है 'मयंक' बताओ आईना इसको दिखलाओ।
नफ़रत के साग़र को हमने बस लबरेज़ यहां देखा॥

+++

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

उन्हें हमारी वफ़ाओं पे ऐतबार नहीं ।
मगर यह कैसे कहें हम-के हमको प्यार नहीं ॥

हनोज़ हम पे इनायत न हो सकी उनकी ।
हमारे जैसा जहां में गुनाहगार नहीं ॥

ख़ुशी के साथ अलम का अटूट रिश्ता है ।
ख़िजा को साथ न लाए तो वो बहार नहीं ॥

गुल और ख़ार का है साथ, चोली दामन का ।
जुदा गुलों से रहे ऐसा कोई ख़ार नहीं ॥

नज़र के तीर की ख़्वाहिश है सब को दुनियां में ।
'मयंक' तीर वो क्या जो जिगर के पार नहीं ॥

ग़ज़ल

रस्मे दुनियां के हिसारों से निकलकर आएँ।
आप आएँ तो इस आदत को बदलकर आऐं ।।

दर्दे फ़ुरक़त तो नहीं देता है पल भर आराम।
ग़म के मारो चलो कुछ दूर टहल कर आएँ ।।

कौन जाने हमें कल वक़्त कहां ले जाए।
दो क़दम आज तेरे साथ तो चलकर आएँ ।।

अब तो बरदाश्त नहीं होती है सोज़िश दिल की।
आओ आ जाओ इस आतिश को उगलकर आएँ ।।

ख़ुद मेरे बस में नहीं है दिल-ए-दीवाना मिरा।
ऐ 'मयंक' उनसे यह कह दो कि सम्भल कर आएँ ।।

++++ग़ज़ल++++

कामयाबी न कामरानी है।
कितनी बे फ़ैज़ ज़िन्दगानी है॥

सुन के पत्थर भी मोम हो जाते।
वो मेरे प्यार की कहानी है॥

जिसमें जज्बा नहीं हो मिटने का।
वोह जवानी भी क्या जवानी है॥

आप कहते हो मुझको दीवाना।
आप ही की तो महरबानी है॥

अब न कहना 'मयंक' को तनहा।
रात खुद चांद की दीवानी है॥

+++

✣✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣✣

अब तो उनसे निगाहें मिलाएँगे हम ।
ग़म नहीं चोट पर चोट खाएँगे हम ॥

हम अंधेरों का शिकवा करेंगे न अब ।
ज़ख्म तनहाईयों में जलाएँगे हम ॥

तुम हमें भूलने की जो कोशिश करो ।
तुम को हर हाल में याद आएँगे हम ॥

उनके रुख़सार से ले के कुछ रोशनी ।
आज बज़्म–ए–तमन्ना सजाएँगे हम ॥

आज गुरबत की तुम बात करना नहीं ।
दिल के मसनद पै तुमको बिठाएँगे हम ॥

जलव–ए–अर्श देखेंगे वो भी "मयंक" ।
चांद की तरहा जब मुस्कराएँगे हम ॥

✣✣✣

++++ग़ज़ल++++

चांद तारे मेरी राहों में बिखर जाते हैं।
वो जो आते है तो हालात संवर जाते हैं॥

तेरी नजरों का करम हम पे जो हो जाता है।
मुस्कराते हुए दिन रात ठहर जाते है॥

उनके दम से हैं ये मस्ती भरी राहें रोशन।
वो जिधर जाते है मैख़ाने उधर जाते हैं॥

हुस्न की बज़्म का दस्तूर तो देखे कोई।
एहले दिल आते हैं और अहले नज़र आते हैं।

सेहमा सेहमा सा नजर आता है माहौल "मयंक"।
लेलिये वक़्त के गेसू जो बिखर जाते हैं॥

+++

✣✣✣ग.ज.ल✣✣✣

जज़्बए इश्क़ उभरता है कि वह आएँगे ।
दिल यह ख़ुशियों से मचलता है कि वह आएँगे ।।

वस्ल की रात का जब जब भी ख़याल आता है ।
दिल ये रह रह के धड़कता है कि वह आएँगे ।।

इन्तज़ार उनका है वह रात को आएँगे ज़रूर ।
दिन क्यों आहिस्ता सरकता है कि वह आएँगे ।।

ज़ुल्फ़ उनकी जो फ़िज़ाओं में बिखर जाए कभी ।
ग़ुन्चा, ग़ुन्चा ये महकता है, कि वह आएँगे ।।

पाँव रखते हैं कहीं और कहीं पड़ते हैं "मयंक" ।
दिल मसर्रत से बहकता है कि वह आएँगे ।।

++++ग़ज़ल++++

चलो चलें भी कि इक़रारे प्यार हो जाए ।
क़दम क़दम मिले इज़हारे प्यार हो जाए ।।

बहुत जहाँ से डरे अब न डरेगें इससे ।
आओ हर बज़्म में इज़हारे प्यार हो जाए ।।

जहां का ख़ौफ़ न इतना हुज़ूर आप करें ।
हमें ये डर है न इनक़ारे प्यार हो जाए ।।

नज़र में हमको बसाओ फ़क़त हमीं को तुम ।
यह चश्म पोशी न दीवारे प्यार हो जाए ।।

तुम अपने पास बुलाकर न दूर कर देना ।
कहीं "मयंक" न बीमारे प्यार हो जाए ।।

++++ग़ज़ल++++

जो टूट जाए अगर दिल तो फिर क़रार नहीं ।
चमन में गुल खिले पर मेरे घर बहार नहीं ॥

तुम्हारी राह के कांटे समेट लाया हूँ ।
तुम्हारी राह में अब एक भी तो ख़ार नहीं ॥

फ़लक का ऐसा सितारा हूँ मैं ख़ुदा शाहिद ।
कि आसमान में मुझसे किसी को प्यार नहीं ॥

ये सुर्ख़ जोड़ा है मेंहदी है और सिंदूर भी है ।
'मयंक' डोली है, दुल्हन है, पर क़हार नहीं ॥

****ग़.ज़.ल****

मोसमे गुल ने दी है खबर ।
प्यार कर प्यार कर प्यार कर ।।

रात ग़म की कटी, हो गई ।
अब सहर अब सहर अब सहर ।।

छोड़ दे तू भटकना ऐ दिल ।
दर बदर दर बदर दर बदर ।।

मुझको प्यारा लगे आज क्यों ।
हर बशर हर बशर हर बशर ।।

दिल तू मायूस होता है क्यों ।
इस क़दर इस क़दर इस क़दर ।।

आज सागर की इठलाई क्यों ।
हर लहर हर लहर हर लहर ।।

चल तू मंज़िल मिलेगी 'मयंक' ।
मत ठहर मत ठहर मत ठहर ।।

***

✣✣✣ग.ज.ल✣✣✣

दिले नादान सम्भाले से सम्भलता ही नहीं।
ऐसा बदला है बदलने से बदलता ही नहीं॥

इतनी बिगड़ी मेरी तक़दीर तेरी फ़ुरक़त में।
कोई अरमां दिले नादां का निकलता ही नहीं॥

इस क़दर मुझको ज़माने ने दग़ा दी यारो।
कोई तूफां मेरे सीने में उबलता ही नहीं॥

दिल तेरी याद में कुछ इतना मयंक का है दुखी।
लाख बहलाता हूं लेकिन ये बहलता ही नहीं॥

✣✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣✣

हम अपने दिल की दुनिया बस यूंही आबाद कर लेंगे ।
तुम्हें तनहाइयों में दिल रूबा हम याद कर लेंगे ।।

हम ऐसा दिल बना लेंगे तुम्हारे इश्क़ में हम दम ।
जिसे हम शाद कर लेंगे कभी नाशाद कर लेंगे ।।

न आने देंगे हम इल्ज़ाम कोई तुम पे दुनियां का ।
तुम्हारे वासते हम ज़िन्दगी बरबाद कर लेंगे ।।

अगर शिकवह शिकायत से तुम्हें नफ़रत सी है तो हम ।
तसव्वुर में ख़यालों में कभी फ़रियाद कर लेंगे ।

'मयंक' अपना किसी के सामने तुम को कहे कैसे ।
तुम्हारी याद से दिल का जहां आबाद कर लेंगे ।।

++++ग़ज़ल++++

वह प्यार करके मुझे यों भुलाए जाते हैं।
वफ़ाएँ जैसे मेरी आज़माए जाते हैं ॥

कभी मिलें कभी रूख़ फेर कर निकल जाएँ।
अजीब आग से वह दिल जलाए जाते हैं ॥

जब उनको अपनी बफ़ा पर यक़ी नहीं तो फिर।
वह सब्ज़ बाग़ मुझे क्यों दिखाए जाते हैं।

हमारे प्यार का एहसास कुछ नहीं उनको।
हम उनके प्यार में हस्ती मिटाए जाते हैं।

पलटके तिरछी निगाहों से देखकर अकसर।
"मयंक" तीर वह दिल पर चलाए जाते हैं ॥

+++ग.ज.ल+++

संगे मरमर से सुनो ये आ रही आवाज़ है ।
ग़ौर से देखो यहां पर सो रही मुम्ताज़ है ।।

इश्क़ वाले ही समझ सकते हैं इसको दोस्तो ।
संगे मरमर में मोहब्बत के लिये कुछ राज़ है ।।

क्यों हकीक़त ताज की हर इक बयां करता रहा ।
इश्क़ जब खुद ज़ीस्त का बजता हुआ इक साज़ है ।।

ताज उल्फ़त का फ़साना है मोहब्बत के लिये ।
इश्क वालों ने किया इस पर बहुत ही नाज़ है ।

इश्क़ वालों में "मयंक" अपना अक़ीदा है यही ।
इश्क़ वाला ही हजारों में सदा जांबाज़ है ।।

++++ग़ज़ल++++

शब गई दिन भी गया जीवन सरकता जा रहा ।
फूल सब मुरझा गए गुलशन महकता जा रहा ॥

एक दिन धड़कन थमेगी जानते हैं सब यहां ।
ज़िन्दगी खामोश है पर दिल धड़कता जा रहा ॥

ज़िन्दगी सब से बड़ी नेमत मिली है दोस्तो ।
ज़िन्दगी का साज़ फिर भी क्यों सिसकता जा रहा ॥

मंज़िले मक़सूद पे पहुँचेगा इक दिन ऐ 'मयंक' ।
ज़िन्दगी का कारवां फिर भी भटकता जा रहा ॥

+++

+++ग़ज़ल+++

नज़र में आपकी तसवीर जो समाई है ।
लगा यूं जैसे ख़ुदा यही ख़ुदाई है ॥

बस एक बार मिलाई थी आप से जो नज़र ।
फिर उसके बाद किसी से नहीं मिलाई है ॥

धुआं उठा था मोहब्बत के आशियाने से ।
किसी ने आग यहां जानकर लगाई है ॥

घटा भी छाई है साग़र है और मीना है ।
फिर आज जाने वफ़ा तेरी याद आई है ॥

वह हम से लाख शिकायत करें तो क्या शिकवा ।
'मयंक' हमने तो रस्मे वफ़ा निभाई है ॥

✣✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣✣

दीवाने तेरी राह से होकर गुज़र गए ।
होकर वह बदगुमान न जाने किधर गए ॥

वह रोशनी को देख के क़ुर्बान हो गए ।
लौ पर यह आज शम्म की जलकर के मर गए ॥

तुम आ गए जो बज़्म में चेहरे भी खिल गए ।
तुम क्या गए कि बज़्म में चेहरे उतर गए ॥

वो ज़िन्दगी भी ख़ाक है जिसमें न आप हों ।
आप आ गए तो जैसे मुक़द्दर संवर गए ॥

दीवानगी की रस्म निभा यूँ 'मयंक' आज ॥
तू भी जा पीछे-पीछे कि दिलबर जिधर गए ॥

✣✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣✣

वह देखो कौन आया, यारे सलाम लाया ।
हम बिन पिये ही झूमे, नज़रों के जाम लाया ।।

हलकान होके रोए, हम रात भर न सोए ।
बादल बरस बरस कर, उनका पयाम लाया ।।

वह तनहा ढूंढते हैं, अरज़ो समां में क्यों कर ।
आवारा चाँद तनहा, फ़ुरक़त की शाम लाया ।।

जब हिज्र में वो रोए, ग़मे इन्तहा तो देखो ।
रोए हैं चांद तारे, शबनम ने यह बताया ।।

उनके ग़मों कीं स्याही, चेहरे से झांकती है ।
शबे-माह ने फ़लक़ से, अफ़साना यह सुनाया ।।

यह चांदनी फ़लक़ में—जब जब 'मयंक' ढूँढे ।
वह दौरे जिन्दगी में, लमहा हसीन आया ।।

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

मेरे ही नाम आया है इस अंजुमन में आज ।
उनका सलाम आया है इस अंजुमन में आज ।।

हम जिसकी आरज़ू में बहकते रहे सदा ।
नज़रों का जाम आया है इस अंजुमन में आज ।।

हलकान होके रोए तिरे इन्तज़ार में ।
उनका पयाम आया है इस अंजुमन में आज ।

दुनिया के ग़म उठाए मगर लब पे है हँसी ।
अब उनका नाम आया है इस अंजुमन में आज ।।

मंज़िल मिली न हम को भटकते रहे 'मयंक' ।
कैसा मक़ाम आया है इस अंजुमन में आज ।।

++++ग़ज़ल++++

ये ज़माने से न डर डर के ठहर जाएँगे ।
क़ाफ़िले प्यार के मंज़िल से गुज़र जाएँगे ।।

होके बेख़ौफ़ ज़माने से मोहब्बत करके ।
तिरे इक प्यार की आतिश से निखर जाएँगे ।।

जज़्बए इश्क़ में परवाने शमा की लौ पर ।
रक़्स करते हुए ख़ुद जाँ से गुज़र जाएँगे ।।

सामने आएँगे जिस दम वो सँवरने के लिये ।
चेहरे आईनों के यक़लख़्त उतर जाएँगे ।।

भूल जाएँ वो हमें हम न उन्हें भूलेंगे ।
उनके कूचे में 'मयंक' शामो सहर जाएँगे ।।

✣✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣✣

कितनी हसीन रात है सुन लीजिये ज़रा ।
आज उनका मेरा साथ है सुन लीजिये ज़रा ॥

मुझ को नहीं है ख़ौफ कोई इस जहान का ।
हाथों में उनका हाथ है सुन लीजिये ज़रा ॥

यह किसने क़ह दिया कि अकेला हूँ में यहां ।
तसवीर दिलमे साथ है सुन लीजिये ज़रा ॥

नीची निगाहें ज़ुल्फ़ परेशां है लब ख़मोश ।
कोई न कोई बात है सुन लीजिये ज़रा ॥

वह रात दिन ख़याल में रहते हैं जो 'मयंक' ।
पहलू में कायनात है सुन लीजिये ज़रा ॥

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

ये क्या है ज़िन्दगी ये होशवाले ही बताएँगे ।
तआर्रुफ़ ज़िन्दगी का सिर्फ़ दीवाने कराएँगे ॥

हमारे दिल पे क्या गुज़रेगी हम यह कह नहीं सकते ।
हमें वादा निभाना है तो हम वादा निभाएँगे ॥

यक़ीनन एक दिन मंज़िल हमें मिल जाएँगी यारो ।
वफ़ा की राह पर चलना है तो चलते ही जाएँगे ॥

तेरी गलियों के लोगों ने कहा है हमको दीवाना ।
तेरी गलियों में आएँगे वफ़ा के गीत गाएँगे ॥

हमें क़ाबू है दिल पर ए 'मयंक' राहे मोहब्बत में ।
किसी की बेवफ़ाई पर न हम आंसू बहाएँगे ॥

****ग़ज़ल****

दास्ताँ उनकी निगाहों से बयां होती है ।
ये हक़ीकत है कि नज़रों की ज़ुबां होती है ॥

एक दूजे में समा जाएं ये मुमकिन ही नहीं ।
ऐसी तक़दीर मोहब्बत की कहां होती है ॥

प्यार करते भी रहें और तड़पते भी रहें ।
ऐसी उलफ़त ही ज़माने में जवां होती है ॥

गीली लकड़ी की तरह जलता सुलगता ही रहा ।
धुआं उठता है वहीं आग जहां होती है ॥

काश आ जाए 'मयंक' आज की शब वो हमदम ।
जब वो पहलू में हों तो रात जवां होती है ॥

+++ग़ज़ल+++

ग़ज़ब ही है कि तेरा ऐतवार करते हैं।
तमाम रात तेरा इंतज़ार करते हैं॥

ज़माना हमसे ये कहता है ना समझ है हम।
तुम्हारे वासते दिल बेक़रार करते हैं॥

कभी उम्मीद से दिल को क़रार होता है।
खुशी से आंख कभी अश्कबार करते हैं॥

कभी जो साथ वो तनहाइयों में होता है।
हसीन चांद को हम राज़दार करते हैं॥

तेरे ख़याल को हम प्यार रात-दिन करके।
'मयंक' ग़म को सजा कर बहार करते हैं॥

++++ग़ज़ल++++

जो उनका नज़ारा करते हैं।
आहों में गुज़ारा करते हैं ॥

हमको तो वीरां आए नज़र।
जो कुछ भी नज़ारा करते हैं ॥

इक तेरी ख़ातिर जाने अदा।
क्या क्या न गवारा करते हैं ॥

ऐ भूलने वाले हम तुझको।
हर वक़्त पुकारा करते हैं ॥

बातों में 'मयंक' न आऐगें।
क्यों रोज़ इशारा करते हैं ॥

++++ग़ज़ल++++

रात भर इन आंखों से नींद वो उड़ाते हैं ।
जब भी मैं भुलाता हूँ, याद और आते हैं ॥

जिनकी ख़ातिर यारो, ज़िन्दगी लुटाते हैं ।
वो तो बस निगाहों से, बिजलियां गिराते हैं ॥

नाम उनका आता है, तारीखों में अक्सर ही ।
इश्क़ में जो हँस हँस के, हस्तियां मिटाते हैं ॥

हम को ग़म की दुनिया से इस क़दर मोहब्बत है ।
आंसुओं से ही अपनी अन्जुमन सजाते हैं ॥

वो कभी तो समझेंगे, ग़म के इस फ़साने को ।
जिनपे ये 'मयंक' अपनी, हर ख़ुशी लुटाते हैं ॥

+++

****ग़ज़ल****

कौन कहता है कि फ़रियाद किये जाते हैं ।
हम तो बस ख़ुद को ही नाशाद किये जाते हैं ।।

हम तसब्बुर में तुझे याद किये जाते हैं ।
दिल की दुनिया यूंही आबाद किये जाते हैं ।।

तेरी यादों के सिवा कुछ न हमें याद रहा ।
ज़िन्दगानी यूँही बरबाद किये जाते हैं ।।

जब कभी बाग़ में आती हैं बहारें हरसू ।
गुज़रे लमहातको हम याद किये जाते हैं ।।

भूल पाए न तुझे दिल से 'मयंक' आज तलक ।
तेरी यादों से ही दिल शाद किये जाते हैं ।।

***

++++ग़ज़ल++++

जवान रात है मेरे क़रीब आ जाओ ।
वफ़ा का वास्ता मेरे हबीब आ जाओ ।।

नसीब आप से ही है मेरा ए जाने जां ।
जगाने आज मेरा फिर नसीब आ जाओ ।।

बिना तुम्हारे मेरा कुछ नहीं है दुनियां में ।
पुकारता है तुम्हें दिल ग़रीब आ जाओ ।।

हुज़ूर आपका बीमार हूँ ख़ुदा की क़सम ।
बस एक बार तो बन कर तबीब आ जाओ ।।

'मयंक' आज तुम्हें दे रहा है जाने वफ़ा ।
वफ़ा का वास्ता मेरे क़रीब आ जाओ ।।

++++ग़ज़ल++++

आज मैख़ाने से बस आती है आवाज़ यही ।
इक गुनाह और सही, एक गुनाह और सही ॥

किसी की बात पे हम आज यक़ी ला न सके ।
बात साक़ी ने कही, बात ये साक़ी ने कही ॥

शबे फ़ुर्क़त जो गुज़ारी थी कभी पी पी के ।
अब नहीं याद रही, अब वो नहीं याद रही ॥

बाद पीने के 'मयंक' आज ही ये समझा है ।
तू नहीं और सही, और नहीं और सही ॥

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

नज़र नज़र से मिले दिल में उतर जाती है।
उम्र भर फिर यही तनहाई में तड़पाती है॥

जो आग दिल में मोहब्बत की लग गई यारो।
वह आग दिल को हमेशा ही फिर जलाती है॥

मैं ने सोचा था तुझे दिल से भुला दूंगा मगर।
याद आ आ के तेरी दिल मेरा तड़पाती है॥

मेरी जुरअत ही नहीं प्यार का इज़हार करूँ।
मगर नज़र ये तेरी हौसला बढ़ाती है॥

'मयंक' आओ चलो, चलके अंधेरों में रहें।
चांदनी रात यहां दिल मेरा जलाती है॥

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

हम तक उनकी नज़र नहीं पहुँची ।
अपनी उन तक ख़बर नहीं पहुँची ॥

जो किनारे पै हमको ला देती ।
ऐसी कोई लहर नहीं पहुँची ॥

अपने घर से जनाब के घर तक ।
क्यूं कोई भी डगर नहीं पहुँची ॥

ज़िन्दगानी में अपनी आज तलक ।
शाम पहुंची सहर नहीं पहुँची ॥

मेरे मरने की भी ख़बर ऐ 'मयंक' ।
आज मुश्किल से उनके घर पहुँची ॥

++++ग़ज़ल++++

हमने जब दिल की लगा कर देख ली ।
ज़िन्दगी अपनी मिटा कर देख ली ॥

दिल के अंगारे पलक पर रख लिए ।
आग पानी मे लगाकर देख ली ॥

कौन क़ीमत दिल की दे पाया यहां ।
ये दुकां दिल की सजा कर देख ली ॥

वो सदा बहरा बना सुनता रहा ।
दास्तां अपनी सुना कर देख ली ॥

गीत उनको कब पसंद आए 'मयंक' ।
हर ग़ज़ल भी गुनगुना कर देख ली ॥

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

मेरी उल्फ़त को छोड़ मत देना ।
अपनी राहों को मोड़ मत देना ।।

दिल तो इक आइना है शीशे का ।
देखो इसको यूं तोड़ मत देना ।।

दर्द ही ज़ीस्त का सहारा है ।
दर्द इसका निचोड़ मत देना ।।

दिल से दिल एक दिन जुदा होंगे ।
दिल 'मयंक' इससे जोड़ मत देना ।।

++++ग़ज़ल++++

हमको गिर गिर के सम्हलना होगा ।
इश्क़े दलदल से निकलना होगा ॥

उनकी राहों में रौशनी करने ।
ख़ुदबख़ुद शाम से जलना होगा ॥

इश्क़ की राह बड़ी लम्बी है ।
दिल लगाकर तुम्हें चलना होगा ॥

शम्मअ से ये कहो गुमां न करे ।
उसकी फ़ितरत है कि जलना होगा ॥

प्यार की की रस्म जुदा होती 'मयंक' ।
सांचए – इश्क़ में ढलना होगा ॥

+++ग़ज़ल+++

मुझको रंगे चिनार दे देना ।
दिल जलाने अंगार दे देना ।।

उनकी मुस्कान जो जवां कर दे ।
एक मुश्ते बहार दे देना ।।

दिल की आतिश को जो करे ठंडा ।
ऐसी ठंडी फुहार दे देना ।।

रंगे गुल आंखों में खटकता है ।
अब तो कांटों का हार दे देना ।।

अपने ग़म सब 'मयंक' को देकर ।
एक मीठा सा बार दे देना ।।

++++ग़ज़ल++++

है हसीं ये चांद ढलने दीजिए ।
आंख पथराई पिघलने दीजिए ॥

गर ख़ुशी कुछ आप दे सकते नहीं ।
ज़िन्दगी में ग़म ही पलने दीजिए ॥

इश्क़ की मंज़िल हमें मिल जाऐगी ।
हमको अंगारों पै चलने दीजिए ॥

हम न बदले थे न बदलेंगे कभी ।
वो बदलते हैं, बदलने दीजिए ॥

गर जहां जलता है जलने दो 'मयंक' ।
अपने कुछ अरमां निकलने दीजिए ॥

++++ग़ज़ल++++

हमै गर तुम्हारे इशारे मिलेंगे ।
तो तूफां में हमको सहारे मिलेंगे ।।

अगर साथ दे दोगे उल्फ़त मे मेरा ।
मुझे राह मे चांद तारे मिलेंगे ।।

सभी दास्तां ये जहां से मिटेंगी ।
फ़साने हमारे तुम्हारे मिलेंगे ।

अगर जाओगे प्यार की मंज़िलों तक ।
तो राहो मे उल्फ़त के मारे मिलेंगे ।।

जो उल्फ़त की पतवार लेकर चलोगे ।
'मयंक' आप को फिर किनारे मिलेंगे ।।

+++

✣✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣✣

उसका ही सांझ और सवेरा है ।
जिसको ख़ौफ़े ख़ुदा ने घेरा है ॥

हो गए राग बंद बीनों के ।
नागों से घिर गया सपेरा है ॥

रौशनी खो गई कहां यारो ।
अब तो हरसू घना अंधेरा है ॥

रात ये हिज्र की नहीं कटती ।
दूर क्यूं हमसे अब सवेरा है ॥

दिल में अपने 'मयंक' झांक ज़रा ।
फिर बता कौन वो लुटेरा है ॥

++++ग़ज़ल++++

मस्ती में झूम झूम के मस्ताने आ गए।
तुम आ गए तो साथ में मैख़ाने आ गए॥

तुमसे मिली नज़र जो कभी ऐ नज़र नवाज़।
ऐसा लगा कि सामने पैमाने आ गए॥

हमने किसी की आज तलक इक नहीं सुनी।
ऐ शेख़ मुझे किसलिए समझाने आ गए॥

निकले थे कूए यार में दीवाना वार हम।
सबने कहा कि देखिए दीवाने आ गए॥

आंखों में इस 'मयंक' की जलवे है आपके।
होठों पे आज आपके अफ़साने आ गए॥

****ग़ज़ल****

इक लतीफ़ा लब पै लाकर देखिए ।
ज़िन्दगी में मुस्करा कर देखिए ।।

पढ़ लिया है आपने इतिहास अब ।
इस सदी का गीत गाकर देखिए ।।

झूम उठ्ठेंगी फ़ज़ाएं जाने जां ।
आप थोड़ा खिल खिलाकर देखिए ।।

दूर भागेगा अन्धेरा एक दिन ।
आप अपना दिल जलाकर देखिए ।।

प्यार में कुछ कर गुज़रना है 'मयंक' ।
तो ज़रा हस्ती मिटा कर देखिए ।।

++++ग़ज़ल++++

जब भी बादल उमड़ घुमड़ बरसे ।
हम तेरी आरज़ू में ही तरसे ॥

तुम जो चाहो वो देखना आलम ।
आ भी जाओ निकल के तुम घर से ॥

हो गई इंतिहा ये ज़ुल्मों की ।
अब तो पानी गुज़र गया सर से ॥

जान दे देंगे हमने सोचा है ।
उठ के जाएँ कहां तेरे दर से ॥

जिन पै हस्ती मिटा चुके हैं 'मयंक' ।
उम्र भर उनके प्यार को तरसे ॥

++++ग़ज़ल++++

हम बेख़ुदी में होके पुकारा न करेंगे।
हम जानते हैं आप गवारा न करेंगे॥

उनकी जो नजर का है असर मेरी नजर में।
अब हम कहीं भी और नजारा न करेंगे॥

मिल जाएंगे गर आप तो मिल जाएंगी ख़ुशियां।
हमको यक़ीं है ग़म में गुज़ारा न करेंगे॥

तुमने जो किए हम पै सितम याद नहीं हैं।
जो भूल गए याद दुबारा न करेंगे॥

हम जानते हैं आपको है ख़ौफ़ जहां का।
अब भूलकर 'मयंक' इशारा न करेंगे॥

++++ग़ज़ल++++

चोट खाने को जहां में ये जिगर होता है।
इश्क़े अंजाम मेरे दोस्त सिफ़र होता है॥

सबने जाना है मुहब्बत में सदा ग़म मिलते।
बिन मुहब्बत के मगर किसका गुज़र होता है॥

बेक़रारी में भी इस दिल को क़रार आता है।
मेरे पहलू में मेरा यार अगर होता है॥

प्यार जज़्बा है मुहब्बत का जिन्दगी के लिए।
प्यार इकबार मेरे यार मगर होता है॥

जो भी बेहिरसो तमा इसको लगाता है गले।
प्यार दुनिया में 'मयंक' उसका अमर होता है॥

++++ग़ज़ल++++

दूर हम से हो गया इन्सान क्यों।
हो गया इन्सान ख़ुद भगवान क्यों॥

जो दिखाता राह भटकों को यहां।
हो गया गुमराह वो ईमान क्यों॥

ग़म ग़रीबों का न शायर देखते।
हैं सुखनवर महफ़िलों की शान क्यों॥

मौत पर सबको यक़ीं है पर यहां।
सौ बरस का सामने सामान क्यों॥

आज गीता रो रही क्यों अमन को।
कोई भी समझे नहीं क़ुरआन क्यों॥

++++ग़ज़ल++++

कह गए आएँगे पर आते नहीं।
अब ये वादे दिल को बहलाते नहीं॥

है ये डर रुसवाइयों का इस क़दर।
आंख से आंसू निकल पाते नहीं॥

बेवजा रूठे हुए हैं हम से वो।
प्यार पर मेरे यक़ीं लाते नहीं॥

लाख आएँ प्यार में रुसवाईयां।
इश्क़ वाले ग़म से घबड़ाते नहीं॥

सीख लो रस्मे वफ़ा हम से 'मयंक'।
प्यार में दिलवर को तड़पाते नहीं॥

++++ग़ज़ल++++

काश हमको ये तेरी नज़रों का तीर मिले।
ग़म के मारों को कोई ग़म की जागीर मिले॥

जिसमें बंध जाने से ज़िन्दगी संवर जाए।
उन घनेरी ज़ुल्फ़ों की कोई ज़ंजीर मिले॥

काश मेरे लग जाए और जिगर ये ज़ख़्मी हो।
ऐसी नज़रों की कोई हमको शमशीर मिले॥

तू ही तू नज़र आए, इस जहां में ऐ दिलबर।
तेरे हों करम मुझ पर ऐसी तक़दीर मिले॥

आरज़ू ये मेरी है जुस्तजू ये मेरी है।
दिल में जो समाए 'मयंक' ऐसी तसवीर मिले॥

++++ग़ज़ल++++

ज़िन्दगी यूं गुज़ारते है हम ।
अपनी बिगड़ी संवारते हैं हम ।।

ग़म की रातें जो कट गई कल तक ।
उनको दिल से बिसारते हैं हम ।।

वक़्त जो उनके साथ गुज़रा था ।
उस को दिल में उतारते हैं हम ।।

गर मुरादें न हो सकें पूरी ।
अपनी ख़्वाहिश न मारते हैं हम ।।

इश्क़ में, होश खो 'मयंक' कभी ।
यूं गिरेबां न फाड़ते हैं हम ।।

+++

++++ग़ज़ल++++

जो हो चांद वाली हो या हो अंधेरी।
तसव्वुर में तुम हो तो हर रात मेरी॥

तुम्हारे बिना मेरे हालात देखो।
खिली धूप लगती है रैना अंधेरी॥

तुझे देखता में, मुझे देखता तू।
जहां देखता शक्लें तेरी या मेरी॥

मोहब्बत ही की कोई चोरी नहीं की।
न डाका ही डाला न की हेरा फेरी॥

'मयंक' आईना दिल का दिखला रहा है।
के सूरत बसी है फ़क़त इसमें तेरी॥

++++ग़ज़ल++++

बेबाक मस्त मस्त नज़र देखिए ज़रा ।
ये ढा रही है कैसा क़हर देखिए ज़रा ॥

रुख़ मैकदे का ना किया सदियो गुज़र गई ।
फिर भी ये बहकने का असर देखिए ज़रा ॥

उनकी निगाहे-नाज़ से पीने लगे हैं लोग ।
तो झूमता हरेक बशर देखिए ज़रा ॥

आबे हयात मैं भी पीऊं ये है आरज़ू ।
बहकेगा सारा सारा शहर देखिए ज़रा ॥

साक़ी पिला 'मयंक' को आबे हयात तू ।
वरना हयात होगी ज़हर देखिए जरा ॥

+++

++++ग़ज़ल++++

रात भर इन आंखों से नींद वो उड़ाते हैं।
जब भी मैं भुलाता हूँ याद और आते हैं॥

हम तो जिन पे ऐ यारों ज़िन्दगी लुटाते हैं।
वो तो बस निगाहों से बिजलियां गिराते हैं॥

नाम उनका आता है तारीखों में अक्सर ही।
इश्क़ में जो हंस हंस कर हस्तियां मिटाते हैं॥

हम को ग़म की दुनियां से इस क़दर मोहब्बत है।
आंसुओं से हम अपनी अंजुमन सजाते हैं॥

वो कभी तो समझेंगें ग़म के इस फ़साने को।
जिन पे ये 'मयंक' अपनी हर खुशी लुटाते हैं॥

++++ग़ज़ल++++

गुलों की बात से वो दिल लुभाए जाते हैं।
बना-बना के तमन्ना मिटाए जाते हैं॥

हमारे सामने ख़ामोश बन के बैठे हैं।
हमारे प्यार को वो आज़माए जाते हैं॥

जहां में और भी ग़म है ये बात कह कर वो।
हमारी दास्तां हम को सुनाए जाते हैं॥

हमारा दिल नहीं टूटे वो डर रहे होंगे।
हमारे इश्क़ को हम से छुपाए जाते है॥

'मयंक' उनकी हक़ीक़त भी हो गई ज़ाहिर।
वो कर के वादा न हम से निभाए जाते है॥

++++ग़ज़ल++++

काहरा छाया है यहां प्यार के निशानों तक ।
शम्मा रौशन तो कोई कीजिए मकानों तक ॥

काम वो इश्क़ में हम करके दिखाएंगे तुम्हें ।
याद रखेंगे हमें लोग ये ज़मानों तक ॥

खौफ दिन रात परेशान किया करता है ।
पत्थर आ जाएं ना शीशे की इन दुकानों तक ॥

जिनकी तक़रीर से बीमार हुई है दुनियां ।
ऐ 'मयंक' आज वो फिर आ गए बयानो तक ॥

आज जो करते है दावा कि अमर होंगे वो ।
कल नज़र हमको न आएंगे वो मसानों तक ॥

++++ग़ज़ल++++

हम चल दिए जो इश्क़ में सुध बुध विसार के।
मेहमान बन के रह गए हम अपने द्वार के॥

कल तक क़ज़ा के ख़ौफ़ से घबड़ा रहे थे जो।
वो ख़ुद खड़े है पास में अपने मज़ार के॥

मुश्किल से उनका तीरे नज़र हमने सह लिया।
दिल पे निशान देखिए उनकी कटार के॥

ग़मगीन होके आ गए वो जब बहार में।
उनके ग़मों से चेहरे ये उतरे बहार के॥

मल्लाह खोजने गया कश्ती को ऐ 'मयंक'।
और पास में बिठा गया ढहती कग़ार के॥

++++ग़ज़ल++++

तुम निगाहों से पिलाओ, बात फिर बन जाऐगी।
साथ मेरे गुनगुनाओ बात फिर बन जाऐगी॥

रात की तनहाइयों में चांद तारों की तरह।
आसमां में जगमगाओ बात फिर बन जाएगी॥

पास आकर दूर जाओ आपकी मर्ज़ी सही।
दूर जाकर लौट आओ बात फिर बन जाऐगी॥

ज़िन्दगी सहरा है इसमें बूंद लेकर प्यार की।
तुम गुलेतर बन के आओ बात फिर बन जाऐगी॥

दूर रह कर दे रहा है ये 'मयंक' उनको सदा।
आभी जाओ, आभी जाओ बात फिर बन जाऐगी॥

++++ग़ज़ल++++

रुख़ से नक़ाब अपने उठाता नहीं कोई ।
बिजली हमारे दिल पे गिराता नहीं कोई ॥

दिल से किसी की याद भुलाता नहीं कोई ।
दौलत यूं प्यार की तो लुटाता नहीं कोई ॥

चुपचाप आके बैठ गये है वो बज़्म में ।
क्या हादसा हुआ है बताता नहीं कोई ॥

चश्मे करम पै नाज़ था पहले हमें कभी ।
करके इशारे हमको बुलाता नहीं कोई ॥

आजाईये "मयंक" बुलाता है आपको ।
महफ़िल ये दिल की रोज़ सजाता नहीं कोई ॥

++++ग़ज़ल++++

उनकी चाहों में दिल नहीं लगता ।
वाह वाहों में दिल नहीं लगता ।।

हम पे जिनका करम न हो यारो ।
उन निगाहों में दिल नहीं लगता ।।

जो कि ऐशों में चूर रहते हैं ।
बादशाहों में दिल नहीं लगता ।।

जिनको ईमान से लगाव नहीं ।
उन पनाहों में दिल नहीं लगता ।।

जिनको ग़म ही जहां में मिलते 'मयंक' ।
ऐशोगाहों में दिल नहीं लगता ।।

+++

++++ग़ज़ल++++

उनकी जवान उम्र नदी का चढ़ाव है ।
लेकिन हयात की ज़रा कमज़ोर नाव है ॥

सामान सौ बरस का सभी ने जमा किया ।
पर मौत से जहान में किसको बचाव है ॥

इन्सान की तो दोस्तो औक़ात ही नहीं ।
घटता है ये कभी, कभी बढ़ता तनाव है ॥

आ जाते है बहाव में कुछ बेगुनाह भी ।
दरिया–ए– वक़्त का यहां ऐसा बहाव है ॥

मरहम लगाए कौन मेरे ज़ख़्म पर 'मयंक' ।
हर ज़ख़्म ला इलाज है, नासूर घाव है ॥

++++ग़ज़ल++++

बात बिगड़े तो हरिक बार बुरी लगती है।
जीत लगती है बुरी हार बुरी लगती है॥

हम जो मजबूर रहे आ न सके वादे पर।
ऐसी हर बात तुम्हे यार बुरी लगती है॥

तुम जो तकरार करो हम न बुरा मानें कभी।
हम जो कर ले कभी तकरार बुरी लगती है॥

अब ये कहते हो के ख़मोश हूँ में क्यूं आख़िर।
मेरी हर बात तो सरकार बुरी लगती है॥

जिस में बरबादी के हालात 'मयंक' आ जाएं।
हम को पायल की वो झंकार बुरी लगती है॥

++++ग़ज़ल++++

कभी बादे सबा लेकर हिना गुलशन में छाती है।
हमें तनहाईयों में आपकी तब याद आती है ॥

शबे वादा सहर तक अश्क़ आंखों में रहे मेरी।
क़सम खाई थी जो इन आंसुओं में झिलमिलाती है ॥

सफ़र इस जिन्दगानी का सुहाना था कभी हम दम।
तुम्हारी याद दिल मेरा अभी तक गुदगुदाती है ॥

मिली इतनी हमें खुशियां तमन्ना कुछ नहीं बाक़ी।
ग़मों कि बात भी हमको नहीं इतना सताती है ॥

'मयंक' अपना कोई शिकवा नहीं करता है दुनियां में।
मेरी बरबादियों पै चांदनी भी झिलमिलाती है ॥

++++ग़ज़ल++++

हर क़दम पै है अंधेरा क्या करें।
दूर हमसे है सवेरा क्या करें ॥

वक़्त के हाथों ने हमको है छला।
वक़्त है अपना लुटेरा क्या करें ॥

जिनसे थी उम्मीद हमको दोस्तो।
उनको मायूसी ने घेरा क्या करें ॥

भाई से भाई ही अब कहने लगा।
ये भी मेरा वो भी मेरा क्या करें ॥

कुछ नहीं दिखता हमें अब ऐ 'मयंक'।
धुंध है हरसू घनेरा क्या करें ॥

++++ग़ज़ल++++

सांपों का अम्बार लगा है स्याह अंधेरे आंगन में।
मारे गए हैं इन नागों से आज सपेरे आंगन में॥

बाहर से कुछ दिखने वाले अन्दर से कुछ दिखते हैं।
हमने जब बंगले में झांका सब थे लुटेरे आंगन में॥

मस्त जवानी जो दिखती थी सड़कों और बाज़ारों में।
आज वही बेज़ार पड़ी हैं बाल बिखेरे आंगन में॥

आज सवालो ने क्यों पूछा एक सवाल सवालों से।
प्रश्न चिन्ह क्यो उभरा हुआ है डाले डेरे आंगन में॥

बनके बहशी आज 'मयंक' को तारीकी ने आ घेरा।
तन्हाई मुझको देखे क्यों, आंख तरेरे आंगन में॥

++++ग़ज़ल++++

जब तुम्हारे साथ थे वो रात भी क्या रात थी ।
दिल में कुछ जज़बात थे वो रात भी क्या रात थी ।।

तुम मिले तो यूं लगा जैसे ख़ुदाई मिल गई ।
हाथ में जब हाथ थे वो रात भी क्या रात थी ।।

तुम भी गाते थे हमारे साथ नगमे प्यार के ।
इश्क़ के नगमात थे वो रात भी क्या रात थी ।।

दिन भी अपने थे सनम रातें भी अपनी थी सनम ।
पुरसुकूँ हालात थे वो रात भी क्या रात थी ।।

ऐसा लगता था सितारों में 'मयंक' अपना वजूद ।
तारो की बारात थी वो रात भी क्या रात थी ।।

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

रफ़्ता रफ़्ता जब जवानी आ गई।
साथ उसके इक कहानी आ गई॥

हसरतें दिल से सभी मिटती गईं।
ग़ासिवों की हुक्मरानी आ गई॥

जब असर उनकी मोहब्बत का हुआ।
ठहरे दरिया में रवानी आ गई॥

ख़त मिला है वो नहीं आ पाएंगे।
शुक्र है कुछ तो निशानी आ गई॥

हिज्र की रातों में होश आया 'मयंक'।
दास्तां अपनी सुनानी आ गई॥

✦✦✦✦ग़ज़ल✦✦✦✦

पीर बढ़ती जा रही है, अब पिघलनी चाहिए।
टीस घावों की जिगर से अब निकलनी चाहिए॥

रस्म की दीवार उठवाई जहां ने प्यार में।
आज उस दीवार की बुनियाद हिलनी चाहिए॥

प्यार के आग़ाज़ से घबरा गया जो दोस्तो।
ऐसे आशिक़ की यहां सूरत बदलनी चाहिए॥

रस्मे उल्फ़त के लिए होना ज़रुरी आग का।
दिल में दोनो के बराबर आग जलनी चाहिए।

सह लिये ग़म तो बहुत खुशियों का दौर आया 'मयंक'।
अब तो कुछ तबीयत 'मयंक' अपनी बहलनी चाहिए॥

+++ग़ज़ल+++

आसमां तक छा रहा कुहरा घना।
चाहता मैं रौशनी को देखना॥

चाहता है क्यों जहां ये रोकना।
चाहता हूं प्यार में मैं डूबना॥

दलदलों की बात कुछ मत पूछिए।
हर किसी का हाथ कीचड़ में सना॥

बात ग़ैरों की तो जाने दीजिए।
आज मेरा दिल यहां दुश्मन बना॥

वो हमारा नाम लें तो कुछ नहीं।
लेकिन उनका नाम लेना है मना॥

++++ग़ज़ल++++

कहना है राज़ दिल का ज़रा पास आईये।
रुख़ अपना मेरे रुख से ज़रा सा मिलाईये॥

हम जानते हैं खौफ़ तुम्हे रोशनी का है।
रोशन चिराग़ दिल का है इसको बुझाइए॥

वो एक वस्ले रात में दो दिल मिला किए।
उस एक वस्ले रात पे कुर्बान जाईये॥

कुछ अपने इश्क़ का तो यक़ीं हो हमें हुज़ूर।
आकर हमारी बज्म में कुछ मुस्कुराईये॥

है आरज़ू 'मयंक' की ऐ जाने इन्तज़ार।
आंखों से मेरे दिल में ज़रा बैठ जाईये॥

✤✤✤✤ग़ज़ल✤✤✤✤

जिस पै तेरी नज़र गई होती ।
उसकी बिगड़ी संवर गई होती ॥

चांद बदली में छुप गया होता ।
ज़ुल्फ़ रुख़ पर बिखर गई होती ॥

ज़िन्दगी कामयाब होती वो ।
प्यार में जो गुज़र गई होती ॥

वो नज़र काश हम से मिल जाती ।
और मिल कर ठहर गई होती ॥

काश उनकी नज़र 'मयंक' कभी ।
दिल में मेरे उतर गई होती ॥

++++ग़ज़ल++++

प्यार की आवाज़ भी आती नहीं।
नाव लहरों से जो टकराती नहीं॥

रोशनी की बात हम करते नहीं।
इस दिये में, तेल है, बाती नहीं॥

छाई है दहशत बहारों में यहां।
गीत भी बुल बुल कोई गाती नहीं॥

रात भर भटका करूं चारो तरफ़।
राह कोई भोर तक जाती नहीं॥

बोझ ग़म का जो उठाले ऐ 'मयंक'।
इस जहां में कोई भी छाती नहीं॥

+++ग़ज़ल+++

झूठ का दुनियां में ऊंचा नाम है।
सच जो बोले वो ही तो बदनाम है॥

रोशनी का था कभी जो मुंतज़िर।
हो गया क्यों आज वो गुमनाम है॥

आज राधा सह रही रुसवाईयां।
आज मुश्किल में बहुत घनश्याम है॥

नाम जो अपने वतन को दे गए।
आज वो कुछ हो गए बेनाम हैं॥

प्यार में कब चैन मिल पाता 'मयंक'।
आशिक़ों को कब यहां आराम है॥

++++ग़ज़ल++++

वो आ रहे हैं जिगर अपना थाम लेंगे हम ।
अब उनका किस तरह यारो सलाम लेंगे हम ।।

नहीं है वास्ता दुनियां से अब कोई हमको ।
ये दिल कहे कि बस अब उनका नाम लेंगे हम ।।

नज़र मिलायेंगे इकबार वो अगर हमसे ।
तो उनकी मस्त निगाहों का जाम लेंगे हम ।।

सुबह-ओ-शाम अगर वो नहीं मिलें हमको ।
न ऐसी सुबह ही लेंगे न शाम लेगें हम ।।

'मयंक' आंखों से इज़हारे इश्क कर देगे ।
ज़ुबां का दोस्तो आंखों से काम लेंगे हम ।।

✦✦✦ग़ज़ल✦✦✦

हो गई हैं दूर सब रानाइयां सुन लीजिए ।
ज़िन्दगी में बस गई तनहाइयां सुन लीजिए ॥

डूबा डूबा सा मेरा दिल आज कल रहने लगा ।
और गहरी होगई गहराइयां सुन लीजिए ॥

कूच-ए-जाना से उठ कर हम न जायेंगे कहीं ।
ग़म नहीं हम को मिलें रुसवाइयां सुन लीजिए ॥

एक लमहे के लिये आकर तसव्वुर में मेरे ।
बज रही हैं दिल में जो शहनाइयां सुन लीजिए ॥

अब तरसता है सुकून-ए-दिल की ख़ातिर ये 'मयंक' ।
दुशमन-ए-जां बन गई पुरवाइयां सुन लीजिए ॥

++++ग़ज़ल++++

ए काश तुम्हे हमसे जाना,
इक बार मोहब्बत हो जाती।
इक मिठी ख़लिश के साथ मेरे,
इस दिल में शरारत हो जाती॥

तुम आओ हमारे पहलू में,
तो वक़्त भी खुद थम जाता है।
उस एक क़यामत से पहले,
दुनियां में क़यामत हो जाती॥

में दर दर ढूंढ रहा तुझको,
पर तेरा पता मिलता ही नहीं।
इक तेरे दर्शन पाने से,
इस दिल की इबादत हो जाती॥

तुम आते रहते हो दिल में,
दिल को मेरे तड़पाते हो।
गर तुम से मोहब्बत होती नहीं,
तन्हाई की आदत हो जाती॥

गर प्यार 'मयंक' उन्हें करते,
फिर तो ऐसा आलम होता।
वो याद भी आते और नहीं,
कुछ ऐसी हालत हो जाती॥

++++ग़ज़ल++++

तेरे जैसा जो यार मिल जाए।
हमको हरसू बहार मिल जाए॥

तू जो इक बार देख ले हंस कर।
मेरे दिल को क़रार मिल जाए॥

तुम जो आंखों में डाल लो काजल।
जब भी चाहो शिकार मिल जाए॥

अपने मरने पे हम भी खुश होंगे।
गर कोई सोगवार मिल जाए॥

काश मिल जाएं वो 'मयंक' मुझे।
प्यार फिर बेशुमार मिल जाए॥

++++ग़ज़ल++++

रात भर जो दर्द की लय पर ग़ज़ल गाता रहा ।
उसको शायद ग़म तेरी फ़ुर्क़त का तड़पाता रहा ॥

एक लम्हा भी सुकूं पाया न तेरे हिज्र में ।
मैं दिले–नादान को हर बार समझाता रहा ॥

बादा करके तू न आया इसका कोई ग़म नहीं ।
तेरा वादा याद मुझको बार बार आता रहा ॥

जब मिरे अरमां भरे दिल पर गिरीं यों बिजलियां ।
गुलशन-ए-हस्ती का भी हर फूल कुम्हलाता रहा ॥

छेड कर साज़े-ए-मोहब्बत बज़मे-ए-हस्ती में 'मयंक' ।
प्यार के नगमें हमेशा दिल मेरा गाता रहा ॥

++++ग़ज़ल++++

है इश्क़ क्या, ये समझ जाओगे कभी न कभी ।
हमारे पास जो तुम आओगे कभी न कभी ॥

सियाह रात में मिल जाऐगा हमें रस्ता ।
जो चांद बन के नज़र आओगे कभी न कभी ॥

कभी तो होगा ज़माने पे राज़े इश्क़ अयां ।
क़सम ख़ुदा की है शरमाओगे कभी न कभी ॥

इसी तरह जो तसव्वुर में रोज आते रहे ।
मेरे ख़यालों पे छा जाओगे कभी न कभी ॥

निगाह दोस्त की ज़द में रहोगे तुम जो 'मयंक' ।
चमकता आईना बन जाओगे कभी न कभी ॥

++++ग़ज़ल++++

दर्शन की प्यासी आंखों को नींद न आई रातो में।
अश्कों ने आंखों से बहकर आग लगाई रातों में॥

उस तक मेरा यह सन्देसा पोहंचा दे ऐ मस्त हवा।
मेरे दिल को तड़पाती है ये तनहाई रातों में।

हिज्र की रातें कैसे गुज़री किसको बताएं हाल अपना।
दूर रहा साया भी हम से इन हरजांई रातों में॥

प्रेम की बरखा बरसी लेकिन पागल मन प्यासा ही रहा।
तब हमने अपने अश्कों से प्यास बुझाई रातो में॥

सांसों के तारों में हमने आस के फूल पिरोए हैं।
काश कभी आ जाए मिलने वो हरजाई रातों में॥

एक अजूबा तुमको बताएं ऐसा देखा और न सुना।
बरखा ने ही देखो 'मयंक' खुद आग लगाई रातों में॥

++++ग़ज़ल++++

कई अरमां मेरे दिल में मचलकर रह गये यारो।
मगर क़िस्मत न बदली हम बदल कर रह गए यारो॥

बड़ी हसरत थी इस दिल में मगर वो कब निकल पाई।
फ़क़त कुछ चंद आंसू ही निकल कर रह गए यारो॥

कभी तुम याद करना दिल में यारो उन शहीदों को।
जो परवाने शमा पे आज जलकर रह गए यारो॥

कोई भी मौत से टक्कर न ले पाया ज़माने में।
कई जाँबाज़ अपने हाथ मल कर रह गए यारो।

इरादा था यही अपना कि मंज़िल पे पहुँच जाते।
'मयंक' अब क्या करें कुछ पांव चलकर रह गए यारो।

++++ग़ज़ल++++

दिल ने ये कहा, उनसे कोई काम नहीं है।
लेकिन इसे फिर भी कहीं आराम नहीं है॥

बरबादिए तसकीन का उनसे नहीं शिकवा।
और अपने मुक़द्दर पे भी इल्ज़ाम नहीं है॥

ये शाम भी क्या शाम है तुम साथ हो मेरे।
इस शाम से रंगीन कोई शाम नहीं है॥

तुम पास बिठाते हुए शरमाते हो जिसको।
दुनियां में 'मयंक' इतना तो बदनाम नहीं है॥

+++

गज़ल

मन्ज़र तमाम ज़ेहन से रुपोश हो गए।
लम्हे थे ज़िन्दगी के कहां जाके खो गए॥

उन पर तो ये गुमान भी मुझको न था कभी।
वो भी दुखा के दिल मेरी आंखें भिगो गये॥

सदियों से मुन्तज़िर था न आए वो आज तक।
अरमान जाग जाग के सब दिल में सो गये॥

दीवाना तेरा हम को जहां कह रहा है आज।
ले हम भी तेरे नाम से बदनाम हो गए॥

दामन से धुल गए सभी शिकवे गिलों के दाग़।
तुरबत पे मेरी आके जो तुम आज रो गए।

अब ऐ 'मयंक' कुछ भी हो अंजाम-ए-ज़िन्दगी।
हम तो किसी के इश्क़ में दीवाने हो गए॥

++++ग़ज़ल++++

खुद ही में दर बदर नज़र आया।
लौटकर में जो अपने घर आया॥

उनकी आंखे जो देखकर आया।
फिर न साग़र उसे नज़र आया॥

उनकी आंखों में अश्क क्या आया।
इक जहां चश्म-ए-तर आया॥

उनकी आंखों के लाल डोरों में।
मेरा खून-ए-जिगर नज़र आया॥

झांक कर ज़िन्दगी को जब देखा।
एक सूखा शजर नज़र आया॥

घर से निकला शबे-ए-अलम जो 'मयंक'।
ग़मज़दा हर बशर नज़र आया॥

+++

++++ग़ज़ल++++

कोई यूँ बेनक़ाब आया है,
जैसे इक माहताब आया है।

जिनको आना था वो नहीं आए,
उनके आने का ख़्वाब आया है।

उनसे मिलने की है लगन दिल में,
आज जिन पर शबाब आया है।

ऐ 'मयंक' उनकी हां पे और ना पे,
प्यार हमें बेहिसाब आया है।

ग़ज़ल

नकाबे रुख़ उठाकर जब कोई पहलू बदलता है।
तो यूँ लगता है जैसे सुबहे दम सूरज निकलता है।।

शहर के लोग ये चेहरे पे चेहरे क्यूं लगाते है।
कहीं चेहरे बदलने से किसी का दिल बदलता है।

किसी की मुस्कुराहट मेरे जीने का सहारा थी।
मगर ज़िक्र-ए-तबस्सुम से ही अब ये दिल दहलता है।।

तुम्हारी जुस्तजू में आंख भी पथरा गई मेरी।
मगर देखो के आंसू बनके यह पत्थर पिघलता है।।

'मयंक' अब तुम बदलते वक़्त में खुद को बदल डालो।
बहारों में हर इक सूखा शजर कपडे बदलता है।।

ग़ज़ल

ग़म ज़रूरी सही ज़िन्दगी के लिए ।
ग़म की दौलत नहीं हर किसी के लिए ॥

अपनी आंखों में सूरज छुपाए हुए ।
हम भटकते रहे रोशनी के लिए ॥

ज़िन्दगी वो जो ग़ैरों के काम आ सके ।
ज़िन्दगी तो है बस ज़िन्दगी के लिए ॥

बढ़के ढादे ये तारीकियों के सुतूं ।
दिल जला राह में रोशनी के लिए ।

ए 'मयंक' अब तेरे सजदे होंगे क़ुबूल ।
सर झुका यार की बंदगी के लिए ॥

++++ग़ज़ल++++

वो तसव्वुर में आ गए होते,
मेरी हस्ती पे छा गए होते।

रश्क अपने नसीब पर करते,
हम अगर उनको भा गए होते।

गरमिए इश्क़ और बढ़ जाती,
उनका पहलू जो पा गए होते।

अपने दोनों जहां संवर जाते,
उनका ग़म हम जो पा गए होते।

हम जहां से 'मयंक' टकराते,
वो जो वादा निभा गए होते।

✦✦✦✦ग़ज़ल✦✦✦✦

मिलो न तुम तो मेरा दिल उदास रहता है।
यही ख़याल मेरे आसपास रहता है॥

भरी है ज़ीस्त में जो तलखियां ज़माने की।
उन्हीं के दर्द से दिल मेहव-ए-यास रहता है॥

उसे जहाँ की है परवाह न ख़ोफ़े-ए-रुसवाई।
मरीज़े-ए-इश्क़ सदा बदहवास रहता है॥

ये ख़ाली ख़ाली से शीशे ये टूटे पैमाने।
यहां तो जैसे कोई देवदास रहता है॥

किसे बताएँ कि हम कितना प्यार करते हैं।
'मयंक' रुह में उनका निवास रहता है॥

++++ग़ज़ल++++

परवतों के पेड़ों पर शाम घिर के आई है।
मेरे साथ मौसम की आंख डबडबाई है॥

क्या हसीं नज़ारा है और समां भी प्यारा है।
ऐसे में तू आ भी जा, याद तेरी आई है॥

कैसे बात बन जाए कैसे काम हो जाए।
मैं जो बे-वफ़ा हूँ तो वो भी हरजाई है॥

जिसको इक नज़र देखूं वो ही मेरा हो जाए।
खुश नसीब हूँ मैंने क़िस्मत ऐसी पाई है॥

एक अदा 'मयंक' उनकी होश खोये देती है।
और जान लेवा वो उनकी अंगड़ाई है॥

++++ग़ज़ल++++

बफ़ा के दीप ब हरसू जलाए बैठा हूँ ।
चले भी आओ के राहें सजाए बैठा हूँ ।।

मेरी वफ़ा का बदल देंगे वो वफ़ा से मुझे ।
उम्मीद ऐसी मैं उनसे लगाए बैठा हूँ ।।

जो ज़ख़्म तुमने दिये थे वो नक़्श हैं दिल पर ।
सहारा जीने का उनको बनाए बैठा हूँ ।।

तुम्हारी राह में हर गाम रौशनी के लिये ।
चराग़ आंखों के कब से जलाए बैठा हूँ ।।

न देगा साथ बुरे वक़्त में कोई भी 'मयंक' ।
हर एक दोस्त को मैं आज़माए बैठा हूँ ।।

+++

++++ग़ज़ल++++

हंसीन कितने हैं उनका शबाब क्या कहिये ।
वो लाजवाब हैं उनका जवाब क्या कहिये ।

नक़ाब रुख़ से उठाया तो यूँ लगा जैसे ।
घटा से निकला हो इक माहताब क्या कहिए ।।

उसे जो देखे बहक जाए मेरा दावा है ।
वो आंख है के है जाम-ए-शराब क्या कहिए ।।

जो देखे देखता रह जाए बस ख़ुदा की क़सम ।
ये कमसिनी में बहार-ए-शबाब क्या कहिए ।

बहार देख के शरमाए ऐ 'मयंक' जिसे ।
लबों पे उनके वो रंग-ए-गुलाब क्या कहिए ।।

✦✦✦✦ग़ज़ल✦✦✦✦

किसी को क़िस्स-ए-ग़म अब न हम सुनाऐंगे।
हज़ार ग़म हों मगर फिर भी मुस्कुरायेंगे ॥

चले भी आइऐ इन झिल मिलाती रातों में।
के हम भी राह में फ़र्श-ए-नज़र बिछाएगें ॥

बफ़ा की राह में दुश्वारियां हो लाख मगर ।
वफ़ा की राह में आगे क़दम बढ़ाएगे ॥

हज़ार परदों में दीदार-ए-यार कर लेंगे ।
तुम्हें कुछ ऐसे तसव्वुर में हम बसाऐंगे ॥

हमारे बाद भी दुनिया न हम को भुलेगी ।
'मयंक' इश्क़ में कुछ नाम कर के जाऐंगे ॥

✦✦✦✦ग़ज़ल✦✦✦✦

नज़रों से दूर सारे नज़ारे चले गए ।
छुपने लगा जो चांद तो तारे चले गए ।।

मैं तो निगाह-ए-यार के तेवर में खो गया ।
वो तीर मेरे दिल में उतारे चले गए ।।

तेरे बग़ैर सांस भी लेना मुहाल था ।
फिर भी तेरे बग़ैर गुज़ारे चले गये ।।

तुम ने पलट के देखा न आवाज़ दी हमें ।
हम हर नफ़स तुम्हीं को पुकारे चले गये ।

तनहाईयों की नज़्र हुई ज़िंन्दगी 'मयंक' ।
वो क्या गये के दिल के सहारे चले गये ।।

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

कली ने-गुल ने-बहारों ने इन्तज़ार किया ।
तुम्हारा शब के सितारों ने इन्तज़ार किया ।।

तुम्हारे आने की उम्मीद पर खिली कलियां ।
मेहकते गुल की क़तारों ने इन्तज़ार किया ।।

हमारे साथ सितारे भी रात भर जागे ।
सहारा देके सहारों ने इन्तज़ार किया ।।

उठी न डोली तेरे घर से मेरी चाहत की ।
तमाम उम्र कहारों ने इन्तज़ार किया ।।

तमाम रात गुज़ारी है लहरें गिन-गिन कर ।
तड़प तड़प के किनारों ने इन्तज़ार किया ।।

'मयंक' आए न मेहफ़िल में तुम तो मेहफ़िल में ।
हमारे साथ हजारों ने इन्तज़ार किया ।।

✣✣✣ग़ज़ल✣✣✣

यूं न रह रह कर हमें तड़पाईये,
आईये अब तो क़रीब आजाइये ।

भूल जाना ख़ुद को आसां है मगर,
कैसे भूलें आपको बतलाइये ।

कर के गुल सब नफ़रतों की मशअलें,
प्यार की शमएं जलाते जाईये ।

अब जुदाई दुश्मन-ए-जां बन गई,
ख़्वाब में आकर गले लग जाइये ।

दूर कीजे दिल की बैचेनी 'मयंक'
अब लबों पर मुस्कुराहट लाइये ।

+++ग़ज़ल+++

जिगर में दर्द-ए- मोहब्बत छुपाए बैठे हैं।
किसे बताएँ कि हम चोट खाए बैठे हैं॥

हज़ार जान से क़ुरबां मैं उनकी आंखों पर।
जो मेरी आंखों से नींदें चुराए बैठे हैं॥

समझ में कुछ नहीं आता जवाब क्या होगा।
सवाल बनके वो दिल में समाए बैठे हैं॥

उन्हें न पास-ए-मोहब्बत है और न पास-ए-वफ़ा।
हम उनके प्यार में हस्ती मिटाए बैठे हैं॥

'मयंक' आना है उनको ज़रुर आएंगे।
चराग़ उम्मीदों के हम भी जलाए बैठे हैं॥

✦✦✦ग़ज़ल✦✦✦

तुम्हारी राह में सजदे किये बहारों ने।
तुम्हारे नक़्श-ए-कदम चूमे हैं सितारों ने॥

नहीं है कोई मेरा अब तेरे सिवा ऐ दोस्त।
कि साथ छोड़ दिया मेरा ग़म गुसारों ने।

डुबोया जब मेरी कश्ती को मौज-ए-तूफां ने।
तो बढ़ के थाम लिया है मुझे किनारों ने॥

नज़र न आए हो तुम आज तक कहीं लेकिन।
तुम्हें पुकारा है हर गाम दिल फ़िगारों ने॥

मिला गुलों से न कलियों से आज तक ऐ 'मयंक'।
जो प्यार हम को दिया है चमन के ख़ारों ने॥

+++ग़ज़ल+++

ग़म-ए-जानां को पाकर दिल हमारा शाद होता है।
ये गुलशन तो ख़िजां के दौर में आबाद होता है॥

रह-ए-उलफ़त में जो मिटता है वो अकसीर बनता है।
वो ख़ुश किस्मत है जो इस राह में बरबाद होता है॥

निकल जाती है ख़ू-ए-आदमीयत जिन के ज़ेहनों से।
उन्हीं में से कोई नमरूद और शद्दाद होता है।

महोब्बत प्यार करना ठीक है लेकिन ये डर भी है॥
अगर नाकाम हो तो आदमी बरबाद होता है॥

हर इक पन्छी को रखता है कफ़स में प्यार से लेकिन।
मगर कुछ भी कहो सय्याद तो सय्याद होता है॥

खड़े हैं ऐ 'मयंक' अरबाब-ए-उलफ़त मुन्तज़िर सारे।
जबान-ए-नाज़ से क्या जाने क्या इरशाद होता है॥

+++ग़ज़ल+++

खुद को अब चरख-ए-मसर्रत से गिराना होगा ।
ग़म की दुनियां में मुझे लौट के आना होगा ।।
करके इज़ाहारे-ए-मोहब्बत हुआ रुसवा-ए-जहां ।
अब तेरा प्यार ज़माने से छुपाना होगा ।।
हो चुका जो भी तेरे प्यार में होना था मगर ।
दिल को अब जब्त का एहसास दिलाना होगा ।।
दूर करने को शबे ग़म के अंधेरे ए दोस्त ।
अपनी पलकों पे सितारों को सजाना होगा ।।
मुझको तसलीम हैं सब नाज़ो-ओ-अदा तेरे मगर ।
रूठ जाऊंगा मैं अगर तो मनाना होगा ।।
फ़िक्र-ए-अन्जाम नहीं शेब-ए-अरबाब-ए-वफ़ा ।
उनसे याराना किया है तो निभाना होगा ।।
उनकी मेहफ़िल से उठे तुम जो 'मयंक' आज तो फिर ।
सारी दुनियां में कहीं भी न ठिकाना होगा ।।

✦✦✦✦ग़ज़ल✦✦✦✦

मेरे पास आओ निगाहें मिलाओ ।
मुझे भी शराब-ए-मोहब्बत पिलाओ ॥
मेरे दिल पे नज़रों के ख़न्जर चलाओ ।
किसी दिन मेरे ज़र्फ़ को आज़माओ ॥
अगर लुत्फ़ लेना है शाम-ए-अलम का ।
मेरी तरह पलकों पे तारे सजाओ ॥
ज़मी से फ़लक तक तुम्हें ढूँढता हूँ ।
छुपे हो कहां कुछ पता तो बताओ ॥
कहीं पढ़ न लें लोग चेहरा तुम्हारा ।
सम्भल कर ज़रा उनकी मेहफ़िल में जाओ ॥
में ख़ुद से बिछड़ कर कहीं खो गया हूँ ।
ख़ुदारा कहीं से मुझे ढूंढ़ लाओ ॥
'मयंक' आबरू-ए-बफ़ा है इसी में ।
के अब सूरत-ए-शम्म जलते ही जाओ ॥

ग़ज़ल

देख कर दौरे-ए-जाम चलता हुआ ।
गिर गया फिर कोई सम्हलता हुआ ॥
ऐसे ठहरा है अश्क पलकों पर ।
जैसे कोई चराग़ जलता हुआ ॥
चल मोहब्बत की राह में ऐ दिल ।
ज़िदगानी का रुख़ बदलता हुआ ॥
तेरी फ़ुरक़त में मुझ को लगता है ।
मेरा साया मुझे निगलता हुआ ॥
छोड़ आये हैं उन की मेहफ़िल में ।
ऐ 'मयंक' इक सवाल जलता हुआ ॥

*

चोट जिगर पर जब से खाई ।
तब से हमको नींद नहीं आई ॥ १०१
चंदा मेरे आंगन चमका ।
तूने जब जब बिन्दिया सजाई ॥
करके तू श्रृंगार जो निकली ।
गूंज उठी हर सू शहनाई ॥
हम भी खड़े हैं राहों में तेरों ।
डाल नज़र हम पर हरजाई ॥
भीड़ में तेरे दीवानों की ।
एक मंयक भी है सौदाई ॥

+++